PAPER -4 UNIT -ii (d)

लेखन

[WRITING]

'लिखना' किसे कहते हैं ?

व्यक्ति अपने विचारों को दो प्रकार से प्रकट करता है—(i) बोलकर, (ii) लिखकर। जब दूसरा व्यक्ति, अपने समीप होता है तो हम अपने विचार बोलकर प्रकट करते हैं। परन्तु यदि कोई व्यक्ति दूर है, तो विचार प्रकट करने के ये साधन हैं—

(क) हम उस व्यक्ति के समीप चले जाएँ।

(ख) उस व्यक्ति को अपने पास बुला लें।

और मौखिक रूप से अपने विचार प्रकट करें। किन्तु यह स्थिति हर समय सम्भव नहीं हो सकती। **''जब विचार प्रकट करने वाला, जब चाहे अपने विचार प्रकट कर सके और जिस व्यक्ति के लिए उसने अपने विचार प्रकट किए हैं, वह जब उसकी इच्छा हो और जहाँ चाहे उन विचारों को ज्ञात कर सके—ऐसी स्थिति में व्यक्ति जिस विधि का आश्रय लेता है—उसे लिखना कहते हैं।''**

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं—**''उच्चरित ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त करना, लिखना है।''** इन प्रतीकों को अक्षर या वर्ण कहा जाता है।'' ये प्रतीक या ध्वनि चिह्न लिपि के विकास की अन्तिम अवस्था है। हम यह भी कह सकते हैं कि **''भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करना, लिखना है।''** लिपिबद्ध करने से भाषा को स्थायित्व प्राप्त होता है।

''अक्षरों या वर्णों को, सुडौल और सुन्दर बनाना भी लिखना कहलाता है।'' लिखकर हम अपने विचार दूर-दूर तक पहुँचा सकते हैं।

Double Tap to Edit

वाचन और लेखन

इस विषय में मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों में मतभेद है कि बालकों को पहले लिखना सिखाया जाए या पढ़ना। श्रीमती मान्टेसरी का कथन है कि बालकों को पहले-पहल लिखना ही सिखाया जाए, क्योंकि यह वाचन की अपेक्षा सरल होता है। श्रीमती मान्टेसरी के मतानुसार लेखन केवल एक शारीरिक क्रिया है, जिसमें बालकों को हाथों की गतिविधियाँ ही करनी पड़ती हैं। यह कार्य वाचन की अपेक्षा सरल है और उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है। वाचन के सम्बन्ध में उनका विचार है कि इसमें बालकों को शब्दों, चिह्नों तथा उनकी ध्वनियों से परिचय प्राप्त कर लेना होता है और यह कार्य काफी कठिन होता है। श्रीमती मान्टेसरी का कहना है कि केवल शब्दों का उच्चारण कर देना मात्र ही वाचन नहीं है। केवल शब्दोच्चारण की क्रिया को इन्होंने 'मुद्रण देखकर भौंकना' (Barking at Print) कहा है। वाचन से तात्पर्य है—शब्दोच्चारण के साथ-साथ अर्थ की प्रतीति तथा वस्तु या तथ्य के सम्बन्ध में; मन में नये-नये विचारों का उदय होना। इन सब कारणों से वह बालकों को पहले लिखना सिखाना चाहती हैं।

श्रीमती मान्टेसरी ने चाहे लिखने की क्रिया को सरल कहा हो, परन्तु वह पढ़ने की क्रिया से कठिन है। पढ़ने में बालकों को अक्षर की आकृति का ज्ञान होना चाहिए, परन्तु लिखने में अक्षरों की आकृति के ज्ञान के साथ-साथ उन अक्षरों को वैसा का वैसा लिख सकने की क्षमता भी होनी चाहिए और इसके लिए आवश्यक है—हाथ की अंगुलियों की माँसपेशियों का यथोचित सन्तुलन। यदि शब्दों का ध्वन्यात्मक परिचय बालकों को पहले से ही प्राप्त होगा तो उनके लिए वाचन के सहारे लिखना सीखना अधिक सुविधाजनक होगा। दूसरे, इस बात का अनुभव बहुतों ने किया होगा कि यदि किसी नई भाषा को सीखने में छः सप्ताह लगते हैं तो उस भाषा में लिखना सीखने में कहीं अधिक समय लगेगा। कई बार ऐसा होता है कि हम किसी भाषा को पढ़कर

समझ तो सकते हैं, परन्तु उसमें लिख नहीं सकते। लेखक का अनुभव है कि वह मराठी, पंजाबी और गुजराती भाषा को पढ़कर समझ तो सकता है, किन्तु इन भाषाओं को लिखने में उसे बड़ी कठिनाई होती है। इन सब बातों से यह स्पष्ट हो गया कि वाचन-क्रिया के विकास के पश्चात् ही लिखना सिखाना चाहिए। वही बालक अच्छा लिख सकेगा, जिसमें ठीक-ठीक पढ़ने की क्षमता होगी। हम बालक की पढ़ी हुई वस्तु से, उसके लेखन का समन्वय करवा सकते हैं। जो बात बालक ने पढ़ी अथवा बातचीत द्वारा सुनी होगी, उस पर वह अच्छी प्रकार से लिख सकेगा।

लेखन-कला का महत्त्व

भाषा पर अधिकार प्राप्ति के लिए जिस प्रकार किसी भाषा का सुनना, बोलना और पढ़ना महत्त्व रखता है, उसी प्रकार लिखने का भी महत्त्व है। अतः इसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

प्राचीन समय से ही भारतवर्ष में सुन्दर लेखन पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है। अक्षर सुडौल हों, सुन्दर हों, इस पर विशेष बल दिया जाता था। न केवल प्राचीन काल में, अपितु मध्यकाल में भी सुन्दर लेख का बड़ा महत्त्व था। मध्यकाल में मुस्लिम राज्यों की एक विशेषता यह भी थी कि उसमें ऐसे व्यक्ति होते थे, जो सुन्दर लेखन की कला में पारंगत थे। फारसी भाषा में सुन्दर और सुडौल अक्षरों को नस्तालीक कहते थे। कोई जमाना था, जब कि हर जगह इस 'नस्तालीक' का बोलबाला था। शिकस्ता (घसीट) लिखावट तो फारसी लिपि में बहुत बाद में आई। यह केवल 'शिकस्ता' लिखावट की कृपा है कि हम उर्दू भाषा में **'बाबाजी अजमेर गये'** को **'बाबाजी अज (आज) मर गये'** पढ़ लेते हैं।

अंग्रेजों के भारतवर्ष में आने के पश्चात् जब से मुद्रण और टंकण यन्त्रों का अधिक व्यवहार होने लगा, तब से लेखन कला का ह्रास ही हुआ है। इसका स्पष्ट परिणाम हम आज के विद्यार्थियों के गन्दे लेख में पाते हैं। विद्यार्थियों का बुरा लेख होने का एक कारण और भी है। अंग्रेजी और फारसी के समान ही हम नागरी लिपि में भी शिकस्ता (घसीट) लिखावट लाना चाहते हैं। यदि हम चाहते हैं कि विद्यार्थियों का लेख सुन्दर बने, तो हमें इस दूषित प्रवृत्ति को दूर करना होगा।

बालकों में लेखन-सम्बन्धी जिज्ञासा उत्पन्न करना

बालकों को लिखना सिखाने से पहले उनमें लेखन-सम्बन्धी जिज्ञासा उत्पन्न करना आवश्यक है, तभी वे लेखन कार्य में रुचि लेंगे। बालक क्रियाशील होते हैं। हमें उनकी इस क्रियाशीलता को प्रोत्साहित करना होगा। बालकों को रंगीन चित्र अच्छे लगते हैं। हम बालकों को भिन्न-भिन्न चित्रों की रूपरेखा देकर रंग भरने को कह सकते हैं। बालक इस कार्य में बड़ी रुचि लेंगे। इस प्रकार हम बालकों को देखी हुई वस्तुएँ पेन्सिल आदि द्वारा बनाने को कह सकते हैं। बालकों की इस रचनात्मक वृत्ति का उपयोग एक कुशल अध्यापक द्वारा अक्षर-लेखन में कराया जा सकता है।

बालकों को लिखना कैसे सिखाया जाए ?

भाषा के जो भिन्न-भिन्न अंग हैं; जैसे—बोलना और पढ़ना, उनकी अपेक्षा लेखन का कार्य कठिन है, क्योंकि लिखते समय हाथ की माँसपेशियों के सन्तुलन की आवश्यकता पड़ती है। जिस बालक ने केवल पढ़ना ही सीखा है, उसमें अभी इस सन्तुलन का अभाव होता है।

ठीक-ठीक लिखने के लिए यह आवश्यक है कि बालक अक्षरों की आकृति का भली प्रकार से निरीक्षण करें और फिर वैसे ही अक्षर लिख सकने में समर्थ हों। बालकों की पाठशालाओं में जो भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, उनका एक प्रयोजन यह भी होता है कि बालकों के भिन्न-भिन्न अंगों की माँसपेशियों में सन्तुलन स्थापित किया जाए।

माँसपेशियों में सन्तुलन स्थापित होने के पश्चात् ही बालकों को लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसके अनुसार प्रत्येक बालक अपने विचार के आधार पर ही लिखना प्रारम्भ करेगा, न कि आयु के आधार पर। हमने प्रायः देखा है कि यदि किसी शिशु के हाथ में चॉक या पेन्सिल आदि पड़ जाए तो वह दीवार पर या फर्श पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचकर लिखने का प्रयास करता है। छोटे बालक की इस प्रवृत्ति का लाभ,

लिखना सिखाने में भी लिया जा सकता है। हम लिखना सिखाने से पहले बालकों से इसी प्रकार की रेखाएँ खिंचवाएँगे।

पहले-पहले बालकों से सीधी रेखाएँ ही खिंचवाई जाएँगी; जैसे—

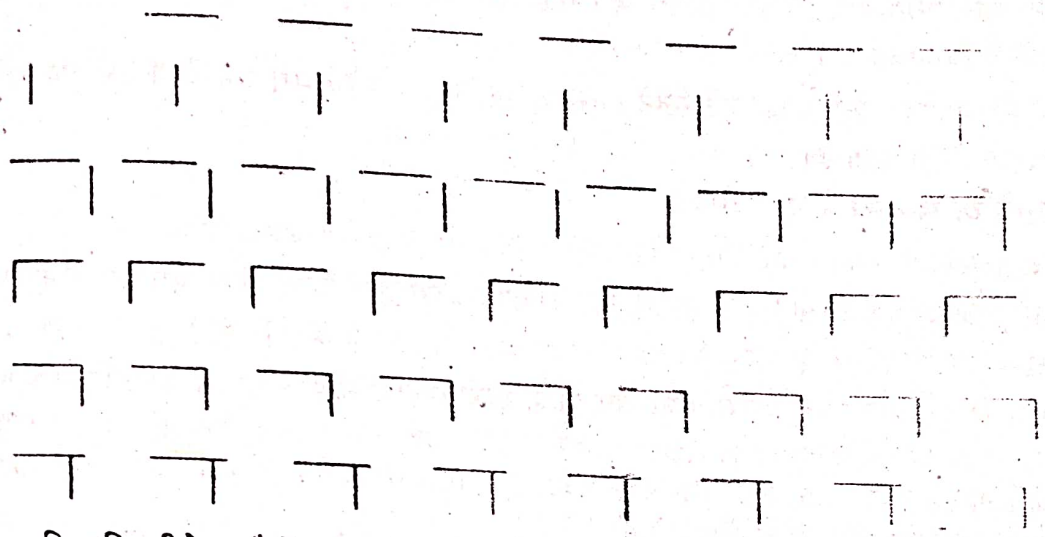

फिर तिरछी रेखाएँ खिंचवाई जा सकती हैं; यथा—

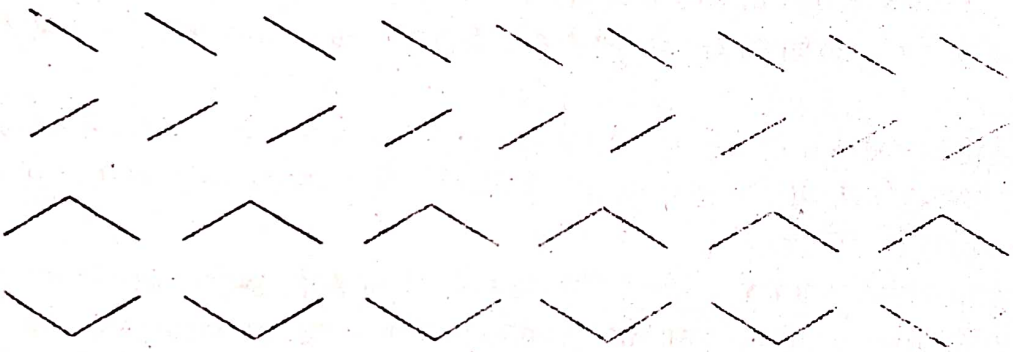

अन्त में वृत्त, अर्द्धवृत्त और घुण्डियाँ आदि बनवाई जा सकती हैं; जैसे—

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन आड़ी-तिरछी रेखाओं के आधार पर बालकों को लिखना सिखाया जा सकता है। बालक तीन वर्ष की आयु से ही टेढ़ी रेखाएँ खींचना प्रारम्भ कर सकते हैं।

इन आड़ी-तिरछी रेखाओं को खिंचवाने के अतिरिक्त निम्नलिखित उपकरणों से भी लेखन क्रिया में सहायता ली जा सकती है—

(1) **गत्ते** आदि के कटे हुए अक्षर।

(2) **रेशमी कपड़ा** तथा **रेगमाल** कागज पर कटे हुए अक्षर।

(3) अक्षरों के आकार-प्रकार के **कटे हुए लकड़ी के टुकड़े।**

(4) किसी **धातु** आदि पर **खुदे हुए अक्षर।**

(5) **धरती** पर **खुदे हुए अक्षर।**

बालक इन वस्तुओं का स्पर्श करेंगे और कुछ समय के अभ्यास के पश्चात् अक्षरों की आकृति से परिचित होने लगेंगे।

इसके अतिरिक्त नीचे लिखी वस्तुओं से भी सहायता ली जा सकती है—

(1) **पोती हुई पट्टियाँ,** जिनमें कलम या खड़िया से अभीष्ट अक्षर लिखे जा सकें।

(2) **छोटे-छोटे श्यामपट,** जिन पर बालक जब चाहें, खड़िया से लिख सकें। अच्छा हो यदि श्यामपट एक इंच के वर्गों में विभाजित हों।

(3) वर्गों में विभाजित इसी प्रकार की **स्लेटें। किण्डरगार्टन** तथा **मान्टेसरी** स्कूलों में इसी प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

लिखना सिखाने के सम्बन्ध में कुछ नियम

बालकों को लिखना सिखाते समय, निम्नलिखित बातों का स्मरण रखना आवश्यक है—

(1) लेखन-चक्र अधिक लम्बा न हो, अन्यथा बालक थक जायेंगे और उनका लेख अच्छा नहीं बनेगा।

(2) लिखना सिखाने का भी एक क्रम है। यह क्रम वर्णमाला के क्रम से कुछ भिन्न है।

(3) लिखना सिखाते समय पहले वही अक्षर चुना जाए, जिसे बालक थोड़े से प्रयास से ही लिख सके। फिर उस वर्ण में थोड़ा-सा परिवर्तन करके, एक और वर्ण बनाया जाए। इसी प्रकार चार-पाँच वर्ण बनवाए जाएँ। सारी वर्णमाला को इसी प्रकार कुछ वर्णों में विभाजित करके अक्षर बनाना सिखाया जाए। इस प्रकार बालक अक्षरों को तुलनात्मक दृष्टि से भी देख सकेंगे।

(4) प्रारम्भ में लिखने की गति पर इतना ध्यान नहीं देना चाहिए, जितना इस बात पर कि बालक जो-जो लिखें, ठीक-ठीक तथा सुन्दर लिखें। यदि बालकों ने सुन्दर लिखना सीख लिया तो बाद में गति भी ठीक हो जाएगी।

(5) एकदम ही बालकों से छोटे-छोटे अक्षर लिखने के लिए न कहा जाए। पहले-पहल उन्हें बड़े-बड़े अक्षर लिखने को दिए जाएँ। इस बात का ध्यान रखा जाए कि उनमें पर्याप्त अन्तर हो। धीरे-धीरे अक्षरों का आकार और अन्तर ठीक होने लगेगा।

(6) वही बालक अच्छा लिख सकेगा, जिसमें ठीक पढ़ने की क्षमता होगी। इसलिए बालकों की पढ़ी हुई वस्तु से ही, उनके लेखन का समन्वय करना चाहिए। जो बात बालक ने पढ़ी हो अथवा जिस विषय पर बालक से बातचीत हो चुकी हो, उसे ही लिखवाना चाहिए।

(7) अच्छा यह होगा कि बालक का नाम ही पहले लिखवाया जाए। इससे बालकों को बड़ी प्रसन्नता होगी। बड़े लोग भी अपने नाम के साथ कोई लेख अथवा कविता छप जाने पर गौरव का अनुभव करते हैं।

(8) बालक लिखते समय जिन उपकरणों का प्रयोग करते हैं, उनमें भी कोई क्रम होना चाहिए। पहले बालक हाथों की अंगुलियों द्वारा धरती पर लिखें, फिर श्यामपट पर चाक से लिखें। बाद में काठ की पट्टियों और स्लेट आदि का प्रयोग किया जाए और सबसे अन्त में बालक कलम और दवात का प्रयोग करके कागज पर लिख सकते हैं।

(9) लिखना सिखाते समय बालकों के व्यक्तिगत भेदों पर पूरी-पूरी दृष्टि रखी जानी चाहिए।

लिखना सिखाने की विधियाँ

अक्षरों और वर्णों को लिखना सिखाने के लिए, इन विधियों का अनुमोदन किया जाता है—

(1) अनुकरण-विधि (Imitation Method)

इस विधि के दो प्रकार हैं—

(क) रूप-रेखा अनुकरण—कुछ मुद्रित पुस्तिकाएँ ऐसी होती हैं, जिनमें अक्षर या वाक्य बिन्दु रूप में लिखे होते हैं। छात्र उन बिन्दुओं पर पेन्सिल या बालपेन फेरता है और अभ्यास करते अक्षरों या शब्दों को लिखना सीख जाता है।

(ख) स्वतन्त्र अनुकरण—अध्यापक श्यामपट पर, स्लेट पर या अभ्यास-पुस्तिका पर अक्षर लिख देता है और बालक से कहता है कि वह नीचे स्वयं, उसी प्रकार के अक्षर लिखें।

(2) मान्टेसरी-विधि

इस विधि में आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों और हाथ—तीनों से सहायता ली जाती है। बालक पहले अक्षरों को देखता है, उनकी ध्वनियों को कानों से सुनता है और रेगमाल आदि के अक्षरों पर अंगुली फेरता है। इस प्रकार वह अक्षरों के स्वरूप से परिचित होकर, उनको लिखना सीख जाता है।

(3) पैस्टालॉजी विधि

इस विधि में वर्णों की आकृति को खण्ड-खण्ड करके, उनका अभ्यास कराया जाता है; यथा—

क—० ० ० ० व व व व क क क क

अध्यापक तख्ती पर, स्लेट पर, श्यामपट पर या बालक की अभ्यास-पुस्तिका पर ऐसे खण्ड बना देता है और बालक उन्हें देख-देख कर लिखता है। कई सुलेख की पुस्तिकाओं में ऐसे खण्ड बने होते हैं।

(4) जैकटाट विधि

इस विधि का अनुमोदन सबसे पहले जैकटाट नामक शिक्षाशास्त्री ने किया था। इसमें बालक स्वयं संशोधन करता है। बालकों ने जो पाठ पढ़ा होता है, उसका कोई वाक्य अध्यापक लिखकर देता है। बालक अनुकरण करके एक-एक शब्द को लिखता है और मूल से मिलाकर देखता जाता है। यदि कोई अशुद्धि हो, तो उसे ठीक कर लेता है। इस प्रकार शब्दों का मिलान करता हुआ, वह पूरा वाक्य लिखने का अभ्यास करता है।

लिखना सिखाने की मनोवैज्ञानिक पद्धति

इस बात की ओर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए कि बालकों को लिखना सिखाने में मनोवैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाए। प्राय: पाठशालाओं में बालकों से पहले वर्णमाला के अक्षर लिखाये जाते हैं, फिर शब्द और उनके पश्चात् वाक्य। मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार यह प्रणाली दोषपूर्ण है और इससे बालक को कठिनाई होती है। बालक जब पाठशाला में भर्ती होने आता है, तो वह छोटे-छोटे वाक्यों में बोलना जानता है। वर्णमाला के भिन्न-भिन्न अक्षर उसके लिए निरर्थक और सारहीन होते हैं। उनका अपने में कोई अर्थ नहीं होता। आपस में मिलकर जब वे शब्दों अथवा वाक्यों के रूप में आते हैं, तभी वे सार्थक बनते हैं अर्थात् उनका अर्थ होता है।

अतएव शिक्षाशास्त्रियों ने इस विषय में जो प्रयोग किये हैं, उनके आधार पर बालकों को पहले सार्थक शब्द अथवा वाक्य ही सिखाये जाएँ।

बालकों को अच्छा लिखने की प्रेरणा देने के लिए यह अच्छा होगा, यदि बालक अपनी लिखावट के सम्बन्ध में स्वयं ही निर्णय दें। अध्यापक बालकों के सामने उन्हीं के द्वारा लिखे गये कई प्रकार की लिखावट के नमूने प्रस्तुत करें और उनकी सहायता से सबसे सुन्दर और सबसे खराब और बीच की कुछ श्रेणियों के कुछ लेख चुनें। फिर प्रत्येक बालक का लेख कौन-सी श्रेणी में आता है, यह देखा जाए। इस प्रकार बालकों को अपने लेख के बारे में स्वयं ही मालूम हो जायेगा और अध्यापक भी यह जान सकेगा कि उनकी प्रगति कैसी है ? क्या अमुक बालक के लेख में कुछ सुधार हुआ है या वैसा ही है अथवा पहले से कुछ बिगड़ गया है। इससे बालकों को अपना लेख और सुन्दर बनाने की प्रेरणा मिलेगी और अध्यापक भी उन बालकों के सम्बन्ध में अनुसन्धान कर सकेगा, जिनके लिखने में कोई सुधार नहीं है अथवा जो पहले से ही खराब लिखने लग गये हैं।

'प्रोसेस ऑफ एजूकेशन' के 1958 के जनवरी मास के अंक में **'लिखना कैसे सिखाएँ ?'** नामक लेख में निम्नलिखित बातें कही गई हैं—

(i) जिस समय बालक लिखने की आवश्यकता अनुभव करे, उसी समय उसे लिखना सिखाया जाए।
(ii) उपर्युक्त स्थिति में बालक से समग्र रूप में लिखवाया जाए।
(iii) बालकों के व्यक्तिगत भेदों का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाए।
(iv) उनकी रुचि को ध्यान में रखकर ही उनसे लिखवाया जाए।

(v) 'सरल से कठिन की ओर'—इस सूत्र का पालन किया जाए।

(vi) इस बात का ध्यान रखा जाए कि बालक से जो अक्षर, शब्द या वाक्य लिखवाया जा रहा है—उसे वह पहचानता है और उसे पढ़ सकता है।

सुलेख या सुलिपि (Good handwriting)

अच्छा लेख, अच्छे व्यक्तित्व का द्योतक होता है। लेख में सुधार का तात्पर्य है—व्यक्तित्व में सुधार। सुलेख जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। छात्रों के लिए तो इसका महत्व और भी अधिक है। परीक्षा में सुलेख में लिखने पर अच्छे अंक प्राप्त होते हैं और खराब लेख से कम अंक प्राप्त होते हैं। परीक्षक की दृष्टि सर्वप्रथम सुन्दर लेख की ओर हो जाती है।

उच्च सरकारी पद प्राप्त करना हो, किसी व्यावसायिक संस्था में प्रवेश पाना हो, सर्वत्र सुलेख को ही महत्व दिया जाता है। सुलेख के कारण पारस्परिक सम्बन्ध मधुर बनते हैं। महापुरुषों ने सदैव सुलेख का ही गुणगान किया है। गाँधीजी कहा करते थे कि "हस्तलिपि का खराब होना अधूरी पढ़ाई की निशानी है।"

अध्यापक और सुलेख—अध्यापक को सुलेख सम्बन्धी समस्त नियमों की जानकारी और उसके उपयोग में सतर्कता रखनी आवश्यक है, अन्यथा बालक की सुलेख सम्बन्धी दुर्बलता उसे जीवन-भर दुःख देगी और वह अपने बुरे लेख पर जीवन भर पछताता रहेगा।

सुलेख की परिभाषा—सुलेख का अभिप्राय है—सु + लेख अर्थात् अच्छा लेख। अच्छे लेख का आशय वह लिखावट है जो अच्छे ढंग से लिखी गई हो, जो अच्छी प्रकार से पढ़ी जा सके और जिसे अच्छी प्रकार से समझा जा सके। जैसे लड़ी में पिरोये हुए मोतियों में चमक होती है, अनुपात होता है, संगठन होता है तथा कला होती है, उसी प्रकार सुन्दर लेख में भी आकर्षण, कला और संगठन होता है।

सुलेख के उद्देश्य—सुलेख के ये उद्देश्य होने चाहिए—

(1) बालक आकर्षक और सुडौल अक्षर लिखने को प्रवृत्त हो।
(2) बालक के हाथ, मस्तिष्क और हृदय में समन्वय हो।
(3) छात्रों को इन्द्रिय शिक्षण मिले।
(4) बालक में सौन्दर्यानुभूति की भावना जाग्रत हो।
(5) छात्रों के जीवन में सुव्यवस्था आए।
(6) विद्यार्थी व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार हो।
(7) छात्र सुन्दर और सुपाठ्य लिखते समय समुचित गति का निर्वाह कर सकें।

बैठने का ठीक तरीका—बैठने के ढंग का भी लिखने पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। यह सावधानी रखनी चाहिए कि बालक सीधा बैठे, झुके नहीं। लिखते समय रीढ़ की हड्डी सीधी होनी चाहिए, झुकी हुई नहीं। चाहे बालक अपने आगे पड़ी चौकी पर कॉपी अथवा तख्ती रखकर लिखे, चाहे वीरासन की स्थिति में घुटनों पर कॉपी या तख्ती रखकर लिखे, उसकी आँखें कॉपी अथवा तख्ती से एक फुट दूर अवश्य हों।

कलम को ठीक ढंग से पकड़ना—प्रारम्भ में बालकों से सरकण्डे की कलम से ही लिखवाना चाहिए। कलम या लेखनी 45 अंश पर कटी होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कलम पकड़ने का ढंग भी ठीक होना चाहिए। इसका लेख की सुन्दरता और गति पर प्रभाव पड़ता है।

अक्षरों की सुन्दरता तथा सुडौलता—सुन्दर तथा सुडौल अक्षरों से तात्पर्य है, अक्षर के प्रत्येक अंग का ठीक-ठीक अनुपात होना। अक्षर न बहुत छोटा, न बहुत बड़ा और न बेढंगे रूप से ही लिखा जाए। लेख सुन्दर हो, इसके लिए नीचे लिखी बातें भी ध्यान में रखनी होंगी—

(i) कागज के दाएँ, बाएँ, ऊपर, नीचे—चारों ओर—कुछ स्थान छोड़कर ही लिखा जाए।
(ii) दो शब्दों के बीच में कम-से-कम एक अक्षर जितना अन्तर अवश्य होना चाहिए।
(iii) दो पंक्तियों के बीच में कुछ अन्तर अवश्य होना चाहिए।
(iv) अक्षर सीधे खड़े रूप में लिखे जाएँ।

सुलिपि या सुलेख की विशेषताएँ—सुलिपि या सुलेख की निम्नांकित विशेषताएँ होती हैं—

(i) जो कुछ लिखा जाता है, वह सुन्दर और आकर्षक होता है।

(ii) अक्षर सुडौल और सानुपात होते हैं।

(iii) जो कुछ भी लिखा जाता है, वह स्पष्ट होने के कारण अच्छी प्रकार से पढ़ा जा सकता है।

(iv) अक्षरों का झुकाव दाहिनी ओर या बायीं ओर नहीं होता। वे बिल्कुल सीधे होते हैं।

(v) पंक्तियाँ टेढ़ी न होकर सीधी होती हैं।

(vi) समान रूपों वाले अक्षर; जैसे—म और य, भ और म, ध और घ—सुपाठ्य लिखे जाते हैं।

(vii) दो शब्दों के बीच, दो पंक्तियों के बीच तथा अनुच्छेदों के बीच उचित अन्तर होता है।

सुलेख या सुलिपि का संशोधन—अध्यापक छात्रों के सुलेख कार्य का संशोधन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें—

(क) यथासम्भव विद्यार्थियों के सुलेख-कार्य का संशोधन उनके सामने ही किया जाए।

(ख) अशुद्ध लिखे गये शब्द या अक्षर को, अध्यापक कॉपी के हाशिए में अथवा अक्षर के पास ही सही लिखें।

(ग) संशोधन के लिए अध्यापक की कलम, छात्र के कलम के अनुपात की हो।

(घ) अशुद्ध अक्षर पर लाल स्याही के कलम द्वारा लिखकर संशोधन करना, उत्तम विधि है। इससे बालक को यह विदित हो जाएगा कि उसके अक्षर की बनावट में कहाँ त्रुटि है।

सुलेख का मूल्यांकन—सुलेख के मूल्यांकन में इन दो बातों का ध्यान रखा जाएगा—

(क) लेख की गति और (ख) लेख की गुणवत्ता (Quality)।

अनुलिपि (Duplication)

अनुलिपि से तात्पर्य—बालक-बालिकाओं द्वारा अध्यापक के आदर्श लेख का बिल्कुल वैसा-का-वैसा अनुकरण। प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षक तख्ती या कॉपी पर अक्षर या शब्द लिख देता है और बालक उसे देख-देखकर ठीक वैसा ही लिखने का प्रयास करता है। बालक अक्षर या शब्द उतने ही बड़े लिखता है, जितने कि अध्यापक ने लिखे हैं।

वर्तमान काल में अनुलिपि के लिए मुद्रित पुस्तिकाएँ भी उपलब्ध हो जाती हैं। इन पुस्तिकाओं में; ऊपर की पंक्ति में सुन्दर सुडौल एवं समानुपाती बड़े-बड़े अक्षर, शब्द या वाक्य मुद्रित होते हैं। बालक नीचे की पंक्तियों में इनकी अनुलिपि करते हैं।

जब बालक अनुलिपि कर रहे हों तब अध्यापक को उनकी सहायता इस ढंग से करनी चाहिए—

(i) बालक ठीक ढंग से बैठें।

(ii) उनका कलम पकड़ने का ढंग सही हो।

(iii) अच्छा लिखने वालों की प्रशंसा की जाए।

(iv) जो बालक अशुद्ध लिख रहे हों, उनकी अशुद्धियाँ साथ-साथ ठीक करवा ली जाएँ।

प्रतिलिपि (Copy)

1. प्रतिलिपि क्या है ?—प्रतिलिपि अनुलिपि का ही विकसित रूप है। अनुलिपि और प्रतिलिपि में यह अन्तर है—

(i) अनुलिपि में अध्यापक के आदर्श लेख या मुद्रित-पुस्तिका के आदर्श लेख का अनुकरण किया जाता है, परन्तु प्रतिलिपि में पाठ्य-पुस्तक या पत्र-पत्रिका के किसी अंश का अनुकरण किया जाता है।

(ii) अनुलिपि में अक्षर उतने बड़े बनाने होते हैं, जितने कि अध्यापक ने बनाए हैं या मुद्रित पुस्तिका की ऊपर की पंक्ति में लिखे हैं, परन्तु प्रतिलिपि में यह बात नहीं पाई जाती।

2. प्रतिलिपि से लाभ—प्रतिलिपि से निम्नलिखित लाभ होते हैं—

(i) बालकों का लेख सुन्दर हो जाता है।

(ii) उनके भाषा-ज्ञान में वृद्धि होती है।

(iii) उनका परिचय नये-नये शब्दों तथा वाक्यों से होता है। इससे उनका शब्द-भण्डार तथा सूक्ति-भण्डार बढ़ता है।

(iv) उनमें शुद्ध लिखने की आदत का विकास होता है।

3. प्रतिलिपि के लिए विषय-वस्तु—प्रतिलिपि के लिए छात्रों की पाठ्य-पुस्तकों, दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों, मासिक पत्रिकाओं तथा कहानियों की पुस्तकों आदि के अंश लिए जा सकते हैं। इससे बालकों की भाषा में शुद्धता आएगी और वे पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के मुद्रित अक्षरों का आदर्श अपने सामने रखते हुए सुन्दर अक्षरों को लिखने का प्रयास करेंगे।

4. प्रतिलिपि सम्बन्धी कुछ अन्य आवश्यक बातें—अध्यापक को प्रतिलिपि सम्बन्धी निम्न बातें सदा ध्यान में रखनी चाहिए—

(i) प्रतिलिपि की विषय-वस्तु बालकों की रुचि के अनुसार हो।

(ii) बालकों के अनुभव तथा ज्ञान-परिधि को ध्यान में रखकर ही प्रतिलिपि सम्बन्धी अंशों का चयन किया जाए।

(iii) जब बालक प्रतिलिपि कर चुकें, तब उसका निरीक्षण अध्यापक द्वारा किया जाए।

(iv) छात्रों की अशुद्धियाँ तथा न्यूनताओं का ज्ञान प्राप्त करके, उनके निराकरण का प्रयास किया जाए।

श्रुत-लिपि या श्रुत-लेख (Dictation)

1. श्रुत-लेख क्या है—श्रुत-लिपि में अध्यापक बोलता जाता है और बालक सुनकर लिखते जाते हैं। कहीं-कहीं पर श्रुत-लेख के लिए सीतावाद्य (ग्रामोफोन) या ध्वनि-लेख यन्त्र (टेप-रिकार्डर) का भी प्रयोग होता है। सुनकर लिखे जाने के कारण, श्रुत-लेख कहा जाता है।

2. श्रुत-लिपि का प्रारम्भ कब करवाया जाए—जब विद्यार्थियों को भाषा की ध्वनियों का, उन ध्वनियों को व्यक्त करने वाले अक्षरों का, अक्षरों की आकृतियों का तथा प्रतिलिपि करने का अभ्यास हो जाए, तभी श्रुत-लिपि या श्रुत-लेख का प्रारम्भ करवाया जाए।

3. श्रुत-लिपि को कैसे सफल बनाया जाए—श्रुत-लिपि की सफलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती है—

(i) विषय-सामग्री बालकों की रुचि, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर चुनी जाए।

(ii) बालकों के पास उचित लेखन-सामग्री हो।

(iii) छात्र ठीक आसन पर बैठाए जाएँ।

(iv) अध्यापक का उच्चारण स्पष्ट हो।

(v) अध्यापक की बोलने की गति ठीक-ठीक हो।

(vi) अध्यापक जो गद्यांश चुनें, वह न तो बहुत सरल हो और न बहुत कठिन। प्रारम्भ में छात्रों को पाठ्य-पुस्तक का ही कोई अंश चुनना चाहिए। बाद में पत्र-पत्रिका का कोई गद्यांश चुना जा सकता है।

4. श्रुत-लिपि की विधि—विधि की दृष्टि से हम श्रुत-लिपि को चार सोपानों में विभाजित कर सकते हैं—

प्रथम सोपान—गद्यांश के नवीन शब्दों को श्यामपट पर लिखा जाए। जब सभी बालक इन शब्दों को अच्छी प्रकार से देख लें, तब उन्हें मिटा दिया जाए।

द्वितीय सोपान—अध्यापक गद्यांश का सस्वर वाचन करें। बालक केवल सुनें और केन्द्रीय भाव को समझ कर लिखने के लिए तैयार हो जाएँ।

तृतीय सोपान—अध्यापक अपेक्षाकृत मन्द गति से; स्वर में आरोह-अवरोह सहित, शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करते हुए गद्यांश को बोलें और बालक उसे सुनकर लिखते जाएँ। लिखते समय किसी शब्द या वाक्य की आवृत्ति नहीं करनी चाहिए।

चतुर्थ सोपान—अध्यापक अपेक्षाकृत तीव्र गति से गद्यांश का वाचन करे ताकि छात्र छूटे हुए और अशुद्ध शब्दों को ठीक कर सकें।

5. श्रुत-लिपि का संशोधन—श्रुत-लिपि या श्रुत-लेख का उपयोग तभी है, जबकि उसका संशोधन किया जाए। संशोधन के ये ढंग हो सकते हैं—

(क) यदि बालकों की संख्या कम हो, तो अध्यापक व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बालक को सामने बुलाकर संशोधन करें।

(ख) बालकों की संख्या अधिक होने पर अध्यापक छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाएँ अपने घर ले जाकर संशोधित करे, परन्तु यदि इस कार्य में विलम्ब हुआ तो संशोधन का पूरा-पूरा लाभ छात्रों को नहीं मिल पाएगा।

(ग) यदि गद्यांश पाठ्य-पुस्तक में लिखा गया है, तो छात्रों को स्वयं अपने कार्य को संशोधित करने के लिए कहा जा सकता है।

(घ) पत्र-पत्रिका से लिया हुआ गद्यांश श्यामपट पर लिखा जा सकता है और छात्र उसे देखकर अपनी अशुद्धियाँ सुधार सकते हैं।

(ङ) छात्र एक-दूसरे की कॉपियाँ लेकर भी संशोधन कर सकते हैं।

(च) बालकों ने जो शब्द अशुद्ध लिखे हैं, उनका शुद्ध स्वरूप उनसे पाँच-पाँच बार लिखवाया जाए, ताकि वह उनके मन में स्थिर हो सके।

6. श्रुत-लिपि से लाभ—श्रुत-लिपि या श्रुत-लेख के निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं—

(क) अध्यापक जो कुछ बोलता है, बालक उसे सावधानीपूर्वक सुनते हैं।

(ख) छात्रों में सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास होता है।

(ग) बालक अध्यापक के सस्वर वाचन के साथ-साथ लिखने का प्रयास करते हैं। इससे उनकी लिखने की गति बढ़ती है।

(घ) बालक विराम चिह्नों का ठीक-ठीक प्रयोग सीखते हैं।

(ङ) विद्यार्थियों की वर्तनी में भी इससे सुधार होता है।

लेखन की कुशलता का मूल्यांकन

निम्नांकित दिए गए लक्षणों के आधार पर, लेखन की कुशलता का मूल्यांकन किया जा सकता है—

(i) बालक सुन्दर, सुडौल, सुपाठ्य अक्षरों में लिख सकते हैं।
(ii) वे शुद्ध वर्तनी में लिख सकते हैं।
(iii) वे विराम-चिह्नों का ठीक-ठीक प्रयोग करके लिख सकते हैं।
(iv) छात्र प्रसंगानुसार आवश्यक गति से लिख सकते हैं।
(v) वे प्रसंगानुसार शब्दों का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं।
(vi) बालक अनु-लेख, प्रतिलेख और श्रुत-लेख लिख सकते हैं।
(vii) लिखते समय वे विषय की एकता बनाए रख सकते हैं।
(viii) वे अनुच्छेद बना कर लिख सकते हैं।
(ix) छात्र क्रमबद्ध रूप से लिख सकते हैं।
(x) वे शुद्ध वाक्यों का गठन कर सकते हैं।
(xi) वे व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।
(xii) बालक विभिन्न रूप में लिखित अभिव्यक्ति कर सकते हैं।
(xiii) वे सरल भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।